खुदा के बन्दे

खुदा के ऐ बंदे...होगया है तू गंदा।
माया के चक्कर का ही ये है फंदा।
मकरी का जाल है यह बन्दे।
तूने ही बुने है यह फंदे।
विकारो मै अब तू फंसा है।
देह अहंकार ने है तुझे जलाया।
देह अभिमान ने है सुलगाया।
काम चिता की अग्नि से ...जुल्स गया है तू बंदे।
नफरत की नज़र से...जल भुन रहा है तू बंदे।
इर्ष्या के कीड़ो ने...चाट लिया है तुझको।
मोह के वश हो ...दुखी हो रहा तू।
अज्ञानता ने तुझे ..ठोकर दिलाई है हरदम।
भटक रहा है मंदिर मज़जिदो गिरजाघरो गुरुद्वारो में।
शांति सुख फिर भी कही नही तुझे है मिलता...
कितना भी समय सम्पति लगा कर....

माथा पटक कर सीढ़िया उतर और चढ़कर..
थक गया फिर भी मिला न तुझको सुकून है।
भूल तूने एक ही की है... पिता को सर्वव्यापी कहकर।
खुद को है तू भुला... देह भान में आकर।
तू है एक सतोप्रधान आत्मा...देवता था सतयुग में।
ाद दिलाने आया है ...खुद खुदा तेरे घर चलके।
पहचान उसे अब तो...बुद्धि के नेत्र तू खोलके।
सुख शान्ति का वारसा ...देने आया संगम पे।
बुद्धि की सफाई करले...ज्ञान का अमृत तू उसमे भरले।
दुःख भूल जाएगा ....सतयुग में लक्ष्मी नारायण का उंच पद पायेगा जब तू।
श्रीमत अगर तू धारण कर ले...खुशियो से भर जाएगा तेरा दामन।
खुद को परिवर्तन करने से... बदल जायेगा विश्व सारा।
खुदा के खिदमतगार बन्दे...जग तुझको ही नमन करेगा।
जग तुझको ही नमन करेगा...शीश को झुका के..
ऐ खुदा के नेक बंदे।